8

काव्यशास्त्र प्रवेश-1

ध्यान दें:

प्रिय शिक्षार्थियों, इस पाठ में साहित्य के प्रवेश के लिए वेदादि वाङ्मय का परिचय आपके लिए प्राप्तव्य है। संस्कृत में काव्य सम्पत्ति सागर के समान अपार और अमूल्य है। उसमें हमारी सनातन ज्ञान राशि और जीवन प्रतिबिम्बित है। उसके जैसी काव्य राशि का मूल स्वरूप वेद ही दिखाई देता है। और वेदों में उपदिष्ट तत्व ही काव्य से प्रकट किए जाते हैं। वेद तो छः अंगों सहित है। अतः आप वेद के छः अंगों का भी परिचय यहाँ प्राप्त करेंगे। वेद काव्य के मध्य में पुराण साहित्य है। इसलिए पुराण का भी सामान्य परिचय आवश्यक है। और वह यहाँ किया गया है। एवं वेद और पुराण का परिचय प्राप्त कर काव्य के प्रवेश के लिए तुम सब योग्य होंगे। उससे आगे के पाठों में कवियों के काव्य और अलंकार शास्त्र के अध्ययन में तुम्हारी भूमिका सिद्ध होती है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे;

- वेदों का परिचय प्राप्त कर पाने में;
- वेदाङ्गों का परिचय प्राप्त कर पाने में;
- पुराणों और उनके प्रयोजन का ज्ञान प्राप्त कर पाने में;
- काव्य के मूल, उसकी विशेषताएं और प्रयोजन को जान पाने में;
- काव्यों को पढ़ने पर और काव्यशास्त्र का अध्ययन करने पर पृष्ठभूमि बनाने में समर्थ हो पाने में;
- वेद, पुराण और काव्य के परस्पर समन्वय को जान पाने में;

8.1) वेद

संस्कृति सुपरिष्कृत जीवन पद्धति का नाम है, जिसके द्वारा क्रमशः आत्म उद्धार होता है। भारतीय सनातन संस्कृति में चार पुरुषार्थ परिकल्पित है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, ये चार पुरुषार्थ हैं। काम ही लौकिक जीवन की तृप्ति अथवा सुख है। अर्थ ही उस प्रकार के सुख लाभ के लिए अपेक्षित वस्त्र,

ध्यान दें:

आहार, धन, क्षेत्र आदि का जीवन साधन है। धर्म के द्वारा अर्थार्जन से उसके द्वारा सुख लाभ में शास्त्रों में विशेष नियम कहे गए हैं। मोक्ष अनन्त शाश्वत आनन्द है। इस प्रकार के विवेक में वेद ही परम प्रमाण है। वेद किसी पुरुष द्वारा रचित ग्रन्थ नहीं है। इसलिए उसे अपौरुषेय कहा जाता है। वह तो ऋषियों के द्वारा किसी योग भूमिका के द्वारा देखा अर्थात् साक्षात्कृत है। इष्ट के लाभ और अनिष्ट के परिहार में जो अलौकिक उपायों को कहता है वह वेद है। इसलिए-

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।
एनं विन्दति वेदेन तस्मात् वेदस्य वेदता॥ ऋग्वेदभाष्यभूमिका॥

उसके जानकार वेद लक्षण को प्रतिपादित करते है। उसका यह अर्थ है- पुरुष जब इष्ट के लाभ में अथवा अनिष्ट के परिहार में प्रत्यक्ष रूप से अथवा आलोचन बल से उपाय को प्राप्त नहीं करते, तब उसी प्रकार के उपाय का जो बोध कराता है वह वेद है। इसलिए वेद ही ज्ञान रूप में प्रतिष्ठित है। विद् ज्ञान अर्थ में इस धातु से वेद शब्द निष्पन्न हुआ है। इसलिए वेद अलौकिक ज्ञान राशि है।

8.2) वेद विभाग परिचय

वेद में मन्त्र और ब्राह्मण प्रधान रूप से दो भाग होते हैं। मन्त्र का संहिता यह भी नाम होता है। उसका मुख्य विषय यज्ञ ही होता है। ब्राह्मण के ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् तीन भाग हैं। ब्राह्मण भाग में मन्त्रों की व्याख्या और यज्ञ प्रक्रिया को मुख्य रूप से निरूपित किया है। आरण्यक भाग में यज्ञों के आराध्य देवताओं का आध्यात्मिकत्व को निरूपित किया गया है। उपनिषद् भाग में ब्रह्म के लक्षण को, आत्मतत्व इत्यादि विषयों को प्रतिपादित किया गया है। इसलिए उपनिषदों का वेदान्त यह नाम भी अत्यन्त प्रसिद्ध है। इसी प्रकार मन्त्र ब्राह्मण में यज्ञादि कर्मो का प्रतिपादन प्रधान रूप से दिखता है। आरण्यक में तो यज्ञ कर्मों का और आध्यात्मिक तत्वों का परस्पर पर्यालोचन प्रधान रूप से दिखाई देता है। अन्य दृष्टि से कर्मकाण्ड और ज्ञानकाण्ड वेद के अलग दो विभाग परिकल्पित है।

8.3) वेद के प्रकार

वेद के चार विभाग होते हैं, वे ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अर्थववेद से प्रसिद्ध है।

8.3.1) ऋग्वेद

ऋक् का अर्थ है स्तुति। यज्ञ देवता की स्तुति प्रधान वेद ऋग्वेद कहलाता है। वह छन्दोबद्ध होता है। इसलिए प्रायः पद्य रूप में होता है। मण्डल-अनुवाक-वर्ग क्रम से, अथवा अष्टक-अध्याय-सूक्त क्रम से इस विभाग की परिकल्पना सम्प्रदाय में है। आधुनिक इतिहास के जानकारों का मत है की ऋग्वेद जगत का प्राचीनतम वाङ्मय है। ऋत्विक्षु ऋग्वेद का ऋत्विक 'होता' होता है।

8.3.2) यजुर्वेद

यजुर्वेद गद्यरूपी होता है। यहाँ यज्ञ प्रक्रियाओं के प्रकार हैं। ऋत्विक्षु यजुर्वेद का ऋत्विक 'अध्वर्युः' होता है। यजुर्वेद, में अध्वर्यु सम्बद्ध मन्त्रों को प्रधानतया दिखाया गया है। इस वेद के शुक्ल यजुर्वेद कृष्ण यजुर्वेद दो प्रकार है। उसके अध्याय-अनुवाक-कण्डिका रूप में विभाग हैं। शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन और काण्व दो शाखा प्राप्त होती है। कृष्ण यजुर्वेद की तो तैत्तिरीय शाखा, मैत्रायणी शाखा और काठक शाखा तीन शाखा प्राप्त है।

ध्यान दें:

8.3.3) सामवेद

सामवेद गान प्रधान होता है। यहाँ प्राय: ऋचाओं को स्वर वैचित्र्य से गाया जाता हैं। ऋत्विक्षु सामवेद का ऋत्विक् 'उद्गाता' है। यज्ञ में उद्गातृ कर्म से सामगान होता है।

8.3.4) अथर्ववेद

अथर्ववेद अथर्व नामक ऋषि के द्वारा देखा गया। इसलिए उसका नाम 'अथर्ववेद' है। यहाँ प्रधान रूप से ऋग्वेद के ही मन्त्र होते हैं। इसके वेदज्ञ ऋत्विक्षु यज्ञ में 'ब्रह्मा' होता है। क्योंकि यहाँ सभी वेदों का सार है। वैसे ही अभिचारिक क्रिया, वनस्पति विद्या, औषध विद्या इसी प्रकार से अनेकों विद्या हैं। इस वेद में बीस काण्ड हैं। सात सौ इक्तीस सूक्त हैं। समस्त वेदान्तों का सार भूत माण्डूक्योपनिषद् यहाँ है। अथर्ववेद की नौ शाखाएँ थी। आज केवल शौनक और पिप्पलाद ये दो शाखा ही प्राप्त होती हैं।

8.4) वेदाङ्गों का परिचय

वेद के अंगभूत छ: शास्त्र हैं। वे सब वेदों के अध्ययन में, वेदों में कहे गए कर्मों में और आचरण में उपकारक होते हैं। इसलिए उनका वेदाङ्ग नाम है। वे सब इस प्रकार संगृहीत है-

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।

कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः॥

इसका यह अर्थ है- विद्वान कहते हैं की शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प वेदों के छ: अंग होते है।

8.4.1) शिक्षा

शिक्षा वेद के उच्चारण के नियमों का बोध कराने वाला शास्त्र होता है। यहाँ वर्ण, उनके स्वर उदात्त आदि, और मात्रा ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत रूप प्रतिपादित किए गए हैं। वेद भेद से और शाखा भेद से शिक्षा भिन्न होती है। याज्ञवल्क्य शिक्षा, नारदीय शिक्षा, पाणिनीय शिक्षा इस प्रकार से अनेक शिक्षा ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। शाखा से सम्बद्ध शिक्षा को प्रातिशाख्य भी कहा जाता है।

8.4.2) व्याकरणम्

वेद की शब्द शुद्धि को और रक्षा के लिए व्याकरण का अध्ययन अनिवार्य है। व्याकरण में तो प्रकृति प्रत्यय आदि के संस्कार से शब्द रूप की सिद्धि प्रधान कार्य परिलक्षित होता है। उससे साधु पद का प्रयोग विज्ञान सिद्ध होता है। वेद मन्त्रों का अर्थ जानने के लिए भी व्याकरण उपकारक है। यज्ञों में, आहुति त्याग में, मन्त्र विनियोग में उस देवता के अनुसार लिंङ् विभक्ति का प्रयोग करना होता है। लिङ विभक्ति का समुचित प्रयोग व्याकरण के ज्ञान के बिना सिद्ध नहीं होता है। इसी प्रकार का वेदोपकारी व्याकरण वेदाङ्ग होता है। लौकिक भाषा में भी साधु पद के प्रयोग में व्याकरण ही शरण योग्य है। सम्प्रदाय के विद्वान कहते हैं

ऐन्द्रं चान्द्रं काशकृत्स्नं कौमारं शाकटायनम्।
सारस्वतं चापिशलं शाकलं पाणनीयकम्॥ इति

ऐन्द्र, चान्द्र, काशकृत्स्न, कौमार, शाकटायन, सारस्वत, अपिशल, शाकल और पाणिनीय ये आठ व्याकरण प्रसिद्ध है। अब पाणिनीय व्याकरण प्रचलित है।

ध्यान दें:

8.4.3) छन्द

वेद मन्त्र छन्दों में निबद्ध है। छन्द में नियत मात्रा और वर्ण होते हैं। इसलिए छन्द गीति प्रधान होते हैं। छन्दों का ज्ञान बिना मन्त्रों के सम्यक् उच्चारण से नहीं हो सकता। इसलिए यह वेदांग है। पिङ्ल का छन्द सूत्र ग्रन्थप्रसिद्ध है जहाँ वैदिक लौकिक छन्दों को लक्षण सहित निरुपित किया गया है।

8.4.4) निरुक्त

वेद मन्त्रों के पदों का अर्थ निरूपण निरुक्त में होता है। निर्वचन का तपत्पर्य है पदों का अर्थबोधन है। अर्थ ज्ञान के बिना वेद मन्त्र में स्वर की परिकल्पना और कर्म आचरण असम्भव होता है। वेद में स्थित कठिन शब्दों को निरुक्त शास्त्र में व्याख्यायित किया गया है। उससे वेद के अर्थ को समझने में वेद के अध्येता का निरुक्त से महान उपकार होता है।

8.4.5) ज्योतिष

ज्योतिष काल का बोध कराने वाला शास्त्र है। वेद में विहित कर्मों को विशिष्ट काल में करना होता है। और वह समय विशेष मास, पक्ष, तिथि आदि अंशों पर आश्रित होता है। मास, पक्ष, तिथि आदि का ज्ञान ज्योतिष में होता है। इसलिए काल विशेष का आश्रय लेकर विहित वैदिक कर्मों के अनुष्ठान में काल बाधक के लिए ज्योतिष महान उपकार करता है। वेद के भेद से वेदांग भूत ज्योतिष भी भिन्न होता है। लागध कृत वेदांग ज्योतिष बहुत प्रसिद्ध है।

8.4.6) कल्प

कल्प यज्ञ प्रक्रिया के निर्वाह के लिए आवश्यक विषयों का बोधक शास्त्र होता है। कल्प शास्त्र ग्रन्थ सूत्र रूप से प्राप्त होता है।

प्रधान रूप से कल्प सूत्र दो प्रकार के होते हैं। श्रौत सूत्र और स्मार्त सूत्र। वेदों में उक्त अर्थात् श्रुति में कहे कर्म विधियों के बोधक श्रौत सूत्र हैं। स्मृति युक्त कर्म विधियों के बोधक स्मार्त सूत्र हैं। स्मार्त सूत्र भी श्रुतियों में कहे कर्म के विधाओं के बोधक होते हैं। उसके पुनः दोविभाग है- धर्म सूत्र और गृह्य सूत्र। वर्णाश्रम के भेद से धर्म का बोध कराने वाले धर्म सूत्र हैं। गृह्य सूत्र में तो सोलह संस्कारों का वर्णन है जो प्रायः गृहस्थ मार्ग में होता है। शुल्व सूत्र का श्रौत सूत्र में अन्तर्भाव होता है। और वह यज्ञ कुण्ड यज्ञशाला आदि के मापन के लिए अपेक्षित होता है। बोधायन, आपस्तम्ब, कात्यायन आदि कल्प सूत्र ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं।

इस प्रकार छः अंगों से परिमित वेद भारतीय जीवन पद्धति का मूल प्रमाण होता है। वहीं प्रमाण भूत है। वह विधि प्रतिबोध मानव जीवन के कृत्य और अकृत्य का उपदेश करता है। वेदों में कहे गए कार्य नहीं करते अथवा वेदों में निषिद्ध कार्य को करते हो तब पाप रूपी दण्ड त होता है। इसलिए वेद प्रभु के समान होकर आज्ञा देता है। उस आज्ञा के अपालन में अथवा दोष युक्त पालन में राजा के समान दण्ड देता है। इसलिए वेद प्रभु सम्मित अलंकार शास्त्र सम्प्रदाय में प्रसिद्ध है।

वेद विश्व का प्रथम वाङ्मय होता है। उसके बाद हुए जो शास्त्र, पुराण, काव्य आदि वाङ्मय हैं उनका मूल वेद ही है। उनमें वेद तात्पर्य ही प्रतिध्वनित है। वेद तात्पर्य से बाहर का वाङ्मय भारतीय संस्कृति में ग्राह्य नहीं होता है।

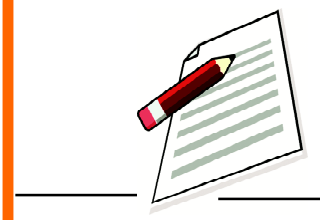

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्न-1

1. यज्ञ विषय की प्रधानता किस वेद में है?
2. स्वरबोधक शास्त्र क्या है?
3. निरुक्त क्या करता है?
4. गान प्रधान वेद कौन-सा है?
5. स्तुति प्रधान वेद कौन-सा है?
6. प्रभुसम्मित कौन है?
7. वेद कहाँ से अपौरुषेय है?
8. भारतीय संस्कृति का संक्षिप्त रूप क्या है?

8.5) पुराण

वेद को पढ़कर जीवन के कृत्य और अकृत्य विवेक को प्राप्त करने में असमर्थ उनके विवेक के लिए तत्वदर्शी मुनियों ने पुराण को रचा। और वे पुराण कर्ता भगवान वेदव्यास है। पुराणों में कहे गए तत्व को उदाहरण रूप में पुराने देव-मुनि-राजा आदि की कथा को कहा गया है। इसलिए 'इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्' साम्प्रदायिक कहते हैं। इतिहास और पुराण से वेद तात्पर्य का विस्तार से निरूपण होता है। अर्थात् विस्तार से दृष्टान्त आदि से अर्थ को प्रकाशित किया है। पुराणों में वर्णित विषय वेदों में कहे हुए गूढ़ तत्वों का भी सरलता से निरूपण करने के लिए अत्यन्त उपकारी हैं। पुराने वृत्तान्तों को धर्म आदि तत्वों के निरूपण के लिए उदाहाण रूप में जहाँ वर्णित करते है वहाँ तत्वों के अभिव्यंजक वे सदैव नए ही होते हैं। इसलिए पुराना भी नया पुराण है ऐसा कहते है। पुरा नाम का अर्थ प्राचीन है। पुराण ग्रन्थों का सामान्य स्वरूप् होता है जैसे-

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पंचलक्षणम्॥

सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर, वंशानुचरित इन पांच अंशों से युक्त पुराण होता है। सर्ग सृष्टि है। प्रतिसर्ग ही सृष्टि लय और पुनः सृष्टि है। वंश ही सृष्टि आदि कब कब कौन-कौन वंश था इस प्रकार का वर्णन। वंशानुचरित में सूर्य चन्द्रवंशीय राजाओं का वर्णन है। ये पांच अंश पुराण में स्थित है। इनके अतिरिक्त भी अनेक विषय पुराणों में हैं।

8.6) पुराणों की संख्या- नाम

पुराणों के रचयिता भगवान वेद व्यास हैं। वे पुराण मुनि इस नाम से प्रसिद्ध ही हैं। पुराणों की संख्या अट्ठारह हैं। उनके नामों के ग्रहण के लिए कोई प्राचीन श्लोक सर्वत्र उद्धृत है। और वह है-

मद्वयं भद्वयं चौव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते॥

यहाँ पुराणों के प्रथम अक्षर को ग्रहण करके उनके नामों का स्मरण किया गया है।

मद्वयम् - मकार प्रथम अक्षर से युक्त दो पुराण है। और वह मत्स्य पुराण, मार्कण्डेय पुराण है।

ध्यान दें:

भद्वयम् - भकार प्रथम अक्षर से युक्त दो पुराण है। और वह भविष्य पुराण, भागवत पुराण है।

ब्रत्रयम् - बकार प्रथम अक्षर से युक्त तीन पुराण है। और वह ब्रह्माण्ड पुराण, ब्रह्म पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण है।

वचतुष्टयम् - वकार प्रथम अक्षर से युक्त चार पुराण है। और वह वराह पुराण, वामन पुराण, वायु पुराण, विष्णु पुराण है।

अ- अग्नि पुराण

ना- नारद पुराण

प- पद्म पुराण

लि- लिंग पुराण

ग- गरुड़ पुराण

क- कूर्म पुराण

स्क - स्कन्द पुराण

इस प्रकार अट्ठारह पुराण प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त गणेश-नारसिंह-सौर आदि अट्ठारह उपपुराण प्रसिद्ध हैं। सभी पुराणों का विस्तार अनन्त आकाश के समान गोचर होता है। पुराणों में वेदों में कहे हुए जीवन विवेक का बोध कराया गया है। किन्तु वेदों में सूक्ष्मता से कहे हुए सृष्टि प्रलय का विचार युग-मन्वन्तर आदि काल परिमाण भगवत अवतार ऐसे ही विशिष्ट विषय पुराणों में अच्छे से निरूपित किए गए हैं। धर्म अधर्म के निर्णय प्रसंग में पुराणों के श्लोक प्रमाण रूप से स्वीकार किए गए है।

पुराणों की प्रतिपादन शैली वेद शैली से भिन्न दिखाई देती है। मन्द बुद्धि वालों के लिए भी गम्भीर तत्वों को जितना हो सकता है उतना विषय का निरुपण यहाँ किया गया है। प्राचीन कथा का निरुपण प्राय: सभी को प्रकाशित होता है किन्तु यहाँ वैदिक भाषा नहीं होती। लौकिक जीवन दर्शन के लिए किया गया निरुपण लोगों को सरलता से हृदय ग्राही होता है। पुराणों में वेद काव्य शैली के मध्य की कोई शैली होती है। उनमें कृत्य अकृत्य का उपदेश मित्र उपदेश के समान कठिन नहीं है, न ही अचानक परिहार्य होते हैं। इसलिए पुराण को आलंकारिक मित्र सम्मित कहते हैं।

पाठगत प्रश्न-2

9. पुरा इसका क्या अर्थ है?

10. पुराण मुनि कौन है?

11. पुराण के कितने लक्षण है

12. मित्रसम्मित नाम का क्या अर्थ है?

13. व-चतुष्टय से कितने पुराणों को ग्रहण करते है?

ध्यान दें:

8.7) काव्य

कवि का कर्म काव्य है ऐसा अलंकारिक कहते हैं। और वह रमणीय शब्द अर्थ युगल है, रसात्मक वाक्य है यह भी अन्य विद्वान कहते हैं। हमारी परम्परा में जीवन विवेक के लिए शास्त्रमार्ग के समान ही काव्य मार्ग को भी अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है।

द्वे वर्त्मनी गिरां देव्याः शास्त्रं च कविकर्म च।
प्रज्ञोपज्ञं तयोराद्यं प्रतिभोद्भवमन्तिमम्॥ इति अवदत् भट्टतौतः।

अन्वय अर्थ- शास्त्रम्- वेदशास्त्रराशिः, कविकर्म च- काव्यं च, गिरां देव्याः- सरस्वत्याः, द्वे वर्त्मनी- द्वौ मार्गौ। तयोः- काव्ययोः मध्ये, आद्यम् - प्रथमम् अर्थात् शास्त्रम्, प्रज्ञोपज्ञम्- बुद्धिषक्त्या निष्पन्नम्, अन्तिमम्- अन्त्यम् अर्थात् काव्यम्, प्रतिभोद्भवम् - कविप्रतिभाश्पाक्त्या निष्पन्नम् अस्ति।

आशय- ज्ञान की देवता सरस्वती होती है। उसकी प्रवृत्ति के लिए मार्ग में दो लोक है। एक शास्त्र मार्ग है। वह प्रज्ञा सामर्थ्य से निष्पन्न है। प्रज्ञा के विचार बल से जो ज्ञान को प्राप्त करने की इच्छा करते हैं। उनका शास्त्ररूपी मार्ग समुचित होता है। सरवस्ती से दूसरा मार्ग काव्य मार्ग होता है। और वह कवि के प्रतिभा बल से निष्पन्न है। जो सहृदय के वश से काव्य में अनुरक्त हैं उनकों काव्य के द्वारा जीवन विवेकात्मक ज्ञान प्राप्त हो सकता है। इस प्रकार शास्त्र और काव्य जीवन सार्थकता के सम्पादन के लिए ही आविष्कृत है। जिसकी जिस प्रकार की अभिरूचि अथवा स्वभाव होता है वह उस मार्ग का अनुसरण करता है। कोई प्राचीन श्लोक कहता है-

वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे।
वेदः प्राचेतसादासीत् साक्षाद् रामायणात्मना॥ इति

अन्वय अर्थ- वेदवेद्ये- सर्ववेदैः वेदितुं शक्ये, परे पुंसि- परमपुरुषे अर्थात् श्रीमन्नारायणे, दशरथात्मजे- दशरथस्य पुत्रे, जाते- संजाते सति, वेदः- श्रुतिः, प्राचेतसात् - वाल्मीकि द्वारा, रामायणात्मना- श्रीमद्रामायणरूपेण, साक्षात् आसीत्- प्रकटितं प्रत्यक्षं वा आसीत्।

तात्पर्यम्- सकल वेद वेदान्तों में पुरुषोत्तम महाविष्णु प्रसिद्ध है। सभी वेद उस पुरुष को ही वर्णित करते है। वह जब दशरथ पुत्र के रूप में अर्थात् श्री राम रूप में अवतारित हुआ था तब समग्र वेद वाल्मीकि के द्वारा रामायण काव्य रूप से प्रकट हुआ था। इसलिए सम्प्रदाओं को जानने वाले विद्वानों का अभिप्राय है कि जैसे नारायण ही श्री राम के रूप में आए वैसे वेद ही रामायण रूप से आया गया। उससे शास्त्रों के समान हीं काव्य की भी परम्परा बहुत प्रचलित थी ऐसा समझते हैं। और हमारे सम्प्रदाय में काव्य की अतीव प्रतिष्ठा है।

8.8) काव्य का मूल

जैसे हमारे सभी विद्या प्रकारों का मूल वेद होता है वैसे काव्य का मूलस्थान वेद ही है। काव्य का प्रथम स्वरूप वेद है। वेदों में हजारों मन्त्र परम काव्यरूप में है।

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च॥ कठोपनिषद्।

अन्वय अर्थ- आत्मानम्- स्वमात्मानम्, रथिनं विद्धि- रथी, रथस्वामी इति जानातु। शरीरं तु- देहं तु, रथं विद्धि- रथः इति जानातु। बुद्धिं तु- मतिं तु, सारथिं विद्धि- सारथिः रथचालकः इति जानातु। मनः एव - चित्तमेव, प्रग्रहं विद्धि- रथाश्वनियन्त्रकं सूत्रम् इति जानातु।

ध्यान दें:

भावार्थ- यहाँ जीवात्मा रथ रूप से परिकल्पित है। शरीर रथ रूप से परिकल्पित है। जैसे रथ का आश्रय लेकर कोई इष्ट स्थान को जाता है वैसे ही शरीर का आश्रय लेकर जीवात्मा अभीष्ट फल को प्राप्त करता है। जैसे रथ के सम्यक् संचालन के लिए उचित सारथी होता है, वैसे कार्य अकार्य का विवेक बुद्धि शरीररूपी रथ को चलाने के लिए आश्रय लिए हुए जिसके द्वारा रथी आत्मा मोक्ष रूपी अपने स्थान को प्राप्त करती है। मन की यहाँ रज्जु रूप में कल्पना की गई है। सारथी के हाथ में जैसे रज्जु होती है वैसे बुद्धि के अधीन मन होता है। यहाँ जीव के मुक्ति लाभ उपाय को कहा है। उस काव्य शैली का निरूपण स्पष्ट प्रतिभासित होता है।

अथवा जैसे,

यथा सम्पुष्पितस्य वृक्षस्य दूरात् गन्धों वाति एवं पुष्पस्य कर्मणो दूरात् गन्धो वाति। महानारायणोपनिषद्।

अन्वयार्थः- यथा- यद्वत, सम्पुष्पितस्य- विकसितपुष्पयुक्तस्य वृक्षस्य - तरोः, गन्धः - परिमलः, दूरात्- दूरप्रदेशात्, वाति- प्रसरति, तथा- तद्वत्, पुष्पस्य- कल्याणात्मकस्य, कर्मणः - क्रियायाः, दूरात्- दीर्घतया, गन्धः - सत्फलं, वाति- व्याप्नोति।

यहाँ सत्कर्म प्रशंसा का पुष्पभरित वृक्ष का सादृश्य वर्णित है। उससे यह मन्त्र काव्यात्मक हुआ। इस प्रकार सहस्त्रों वेद मन्त्र हैं। जिनमें रमणीय काव्य स्वरूप उल्लासित है। इस प्रकार वेद काव्य का मूल प्रतीत होता है।

8.9) काव्य का विकास

जैसे वेदों में वैसे पुराणों में भी काव्यात्मक श्लोक प्राप्त होते हैं। भगवत महापुराण तो रसात्मक रमणीय वर्णनों से विलसित पुराण है। काव्य धर्म का वेदों की अपेक्षा अधिक विकास दिखाई देता है। परन्तु पुराणों में काव्यशैली प्रधानतया दिखाई नहीं देती। इसलिए जगत में प्रथम परिपूर्ण काव्य अवतार का नाम वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण है। इसलिए रामायण आदिकाव्य और आदिकवि वाल्मीकि संसार में प्रसिद्ध है। भोजराज -

मधुमयभणितीनां मार्गदर्षी महर्षिः कहते है।

अर्थ- सरस सुमधुर वचनों की रचना करने वाले सभी कवियों के मार्गदर्शी महर्षि वाल्मीकि हैं। रामायण में भी सभी काव्यों का सर्वोच्च निदर्शन है। रामायण में परिपूर्ण काव्यत्व दिखाई देता है। रामायण को आधार बनाकर अनेकों कवियों ने हजारों काव्यों की रचना की। इसलिए दूसरे कवियों का आधार कहकर उत्तर काल में कवियों का परमाधार रामायण होता है वाल्मीकि ने स्वयम् उद्घोषित किया।

रामायण से अन्य विरचित बड़े काव्य का नाम महाभारत है। महाभारत काव्य है, व्यास ने स्वयं कहा है।

कृतं मयेदं भगवन् काव्यं परमपूजितम्।

हे भगवन् मेरे द्वारा महाभारत नामक परम पूज्य काव्य को रचा गया। उसका गाम्भीर्य 'भारतं पंचमो वेदः' इस प्रसिद्ध वचन से ज्ञात होता है। उत्तर काल में महाभारताश्रित अनेक कवियों ने हजारों काव्य की रचना की।

महाभारत से अन्य कालिदास-भास-अश्वघोष बहुत से कवियों ने उत्कृष्ट महाकाव्य, नाटक आदि

ध्यान दें:

अनेक प्रकार के काव्यों की रचना की। उसके बाद भारवि-माघ-बाणभट्ट-भवभूति-श्री हर्ष-कुमारदास आदि अनेक कवियों नें हजारों काव्य रचे। उससे काव्यलोक अत्यन्त विकास को प्राप्त हुआ। इसलिए बहुत से महाकाव्यों, खण्डकाव्यों, नाटकों, चम्पूकाव्यों, गद्यकाव्यों इस प्रकार के अनेक काव्यप्रकार हुए। आज भी संस्कृत काव्य प्रपंच बढ़ता ही दिखाई दे रहा है। इसलिए आज संस्कृत काव्य लोक की गणना असम्भव हो गई।

8.10) काव्य की विशेषताएँ और प्रयोजन

वेद प्रभुसम्मित कहलाता है। पुराण मित्र सम्मित कहलाता है। काव्य ही कान्ता सम्मित होते हैं। कान्तासम्मितं का अर्थ कान्ता सदृश है। कान्ता का अर्थ है प्रिय भार्या। जब लोक में साध्वी को कुशला को और कान्ता को कोई भी जिज्ञासु पूछता है। तब वह साक्षात् अभिप्राय वाचक वाक्यों को त्याग देती है। फिर स्मित-कटाक्ष-मुख मन आदि चेष्टा विशेष परोक्ष रूप से अपने अभिप्राय के सूचक वचनों से अभिमत अर्थ के लिए ज्ञापित करती है वहाँ प्रिय को प्रवृत्त करती है। जैसे क्या आम्रफल का आस्वादन करोगी या द्राक्षाफल अर्थात् अंगूर का ऐसा प्रिय कान्ता को पूछता है। तब आम्रफल का आस्वादन करूंगी ऐसा साक्षात् नहीं कहती है। आम्रफल मीठा, परिमलयुक्त, बहुत से रंगों से युक्त होता है ऐसा कहती है। उसे इस प्रकार कहना होता है कि मैं आम्रफल के आस्वादन की इच्छा करती हूँ। इस प्रकार कान्ताओं की जैसी परोक्षरूप से अपनी अभिप्राय व्यंजन शैली होती है वैसे ही काव्य की भी होती है। इसलिए काव्य कान्तासम्मित है ऐसा प्रसिद्ध है। कान्ता वचन जैसे सरस मनोहर होता है वैसे काव्य भी सरस और रमणीय होता है। जिससे सहृदयों का हृदय आकृष्ट होता है। इस कारण से वेद और पुराण से विलक्षण अर्थात् अलग होता है।

इस प्रकार के काव्य के आनन्द बोध रूप अनेक प्रयोजन है। वेद अर्थ के विस्तार से विवरण के लिए काव्य उपयोगी है ऐसा प्राचीनों का मत था। जैसे भगवान् वाल्मीकि ने कहा है-

स तु मेधाविनौ दृष्ट्वा वेदेषु परिनिष्ठितौ।
वेदोपबृंहणार्थाय तावग्राहयत प्रभुः॥ वाल्मी.रा.बा.का.4.6
काव्यं रामायणं कृत्स्नं सीतायाश्चरितं महत्॥ 4.7

अन्वय अर्थ- प्रभुः - वाल्मीकिः, मेधाविनौ - प्रज्ञावन्तौ, वेदेषु - श्रुतिषु, परिनिष्ठितौ - सम्यक् अध्ययनवन्तौ, तौ- लवकुशौ, दृष्ट्वा- अवलोक्य, ज्ञात्वा वा, वेदोपबृंहणार्थाय - वेदार्थस्य समन्वयदृष्टया प्रदर्शनाय, सीतायाः चरितम् - जानकीचरित्रात्मकं, कृत्स्नं - समस्तम् रामायणम्-रामायणनामकम्, महत् काव्यम् - महाकाव्यम्, अग्राहयत- ग्राहितवान्, शिक्षितवान्।

यहाँ यह भाव है कि वाल्मीकि ने लवकुश को वेदाध्ययन से वेदों में कहे जीवन धर्मों को लोक जीवन में समन्वय की दृष्टि से निरूपण करने के लिए रामायण काव्य को पढ़ाया। उससे काव्य वेदार्थ के निरूपण में अत्यन्त सहायक होता है ऐसा समझते हैं। व्यास का महाभारत काव्य भी वेदार्थ विस्तार ही परिलक्षित होता है। इसलिए पंचम वेद ऐसी कीर्ति महाभारत की होती है। वेदों के उपदेश से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थों का ही विवेक होता है। इसलिए आलंकारिक काव्य का प्रयोजन पुरुषार्थों की प्राप्ति है ऐसा कहते हैं।

भामह कहते हैं-

धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्य निषेवणम्। काव्यालंकार 1.2।

पाठ-8

काव्यशास्त्र प्रवेश-1

ध्यान दें:

अन्वयार्थ- साधुकाव्यनिषेवणम् - सत्काव्यानाम् अध्ययनम्, धर्मार्थविषयेषु, कलासु च-गीत-नाटयादिकलानां विषयेषु, वैचक्ष्ण्यम् -कौशलं, बोधम्, कीर्तिम् - यशः, प्रीतिम् - आनन्दं च करोति-जनयति।

भावार्थ- सत्काव्यों का प्रथम फल होता है कि धर्मादि विषयों का सम्यक् बोध हो। काव्य के द्वारा कवियों को धनलाभ भी होता है। गीत-नृत्य आदि कलाओं में काव्य से कौशल बढ़ता है। काव्य से कवियों को महान यश की प्राप्ति होती है। उस कीर्ति से कालिदासादि महाकवि आज भी जीवित हैं। दूसरा महान फल प्रीति है। प्रीति का नाम आनन्द है। और यहाँ वह रसास्वाद है। वेद-शास्त्र-पुराणादि में पुरुषार्थ विवेक नीरसता लिए होता है। काव्य में तो रसास्वादपूर्वक पुरुषार्थविवेक होता है ऐसी काव्य की विशेषता है।

लोक में वेदादि के अध्ययन से जीवन विवेक को प्राप्त किया ऐसा कम ही दिखाई देता है। काव्यों से जीवन विवेक को प्राप्त करने वालों की संख्या अधिक हैं। इसलिए इस लोक में काव्य की अत्यन्त आवश्यकता और प्रतिष्ठा है।

पाठ सार

जगत में प्राचीनतम वाङ्मय वेद है। वह अपौरुषेय है। वह इष्ट प्राप्ति और अनिष्ट के परिहार के उपाय को बताता है। भारतीय संस्कृति में वह ही परम प्रमाण है। और वह ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद चार प्रकार का है। इन चारों वेदों के मन्त्र, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् उपविभाग होते हैं। यह वेद सांसारिक योगक्षेम ओर मोक्ष की सिद्धि के लिए उपदेश देता है। इसके शिक्षा-व्याकरण-छन्द-निरुक्त-ज्योतिष-कल्प छः अंग शास्त्र होते हैं। वेद प्रभुसम्मित कहलाते हैं।

वेदों में कहे गए धर्म को सरलता से निरूपित करने के लिए भगवान वेदव्यास ने पुराणों को रचा। वे अट्ठारह हैं। पुराणों को मित्र सम्मित कहते हैं।

काव्य तो कान्ता सम्मित होते हैं। वेदों में कहे गए धर्म अर्थ काम मोक्ष का बोध यहाँ सुगमता से होता है। काव्य का प्रथम निदर्शन वेद मन्त्र ही है। पुराणों में भी काव्यात्मक शैली दिखाई देती है। रामायण तो समस्त जगत का आदिकाव्य है। रामायण से आरम्भ होकर काव्य का विकास हुआ। फिर व्यास ने महाभारत को रचा। महाभारत पंचम वेद है ऐसा प्रसिद्ध है। रामायण और महाभारत का आश्रय लेकर हजारों काव्यों को अनेक कवियों के द्वारा रचा गया है। उससे काव्यलोक को महान विकास प्राप्त हुआ। काव्य के द्वारा जीवन में कृत्य अकृत्य का विवेक प्राप्त करने वाले अधिक हैं। इसलिए काव्य का अत्यन्त महत्व है।

आपने क्या सीखा

- वेदों का परिचय
- वेदांगों का परिचय
- पुराणों का ज्ञान और प्रयोजन
- काव्य का मूल, विशेषताएँ और प्रयोजन
- वेद, पुराण और काव्य का परस्पर समन्वय

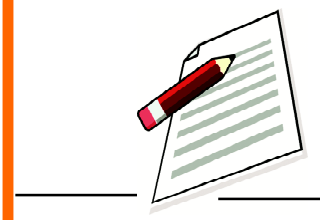

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्न-3

14. सरस्वती के दो मार्ग कौन-से हैं?
15. काव्य का प्रथम अस्तित्व कहाँ प्राप्त होता है?
16. आत्मरूपी रथी की बुद्धि कौन है?
17. आदिकाव्य क्या है?
18. काव्य वचनों का मार्गदर्शी कौन है?
19. पंचम वेद कौन है?
20. कान्तासम्मित उपदेश क्या है?
21. वाल्मीकि ने लवकुश को किसलिए रामायण पढ़ायी?
22. काव्य से पुरुषार्थ विवेक कैसे होता है?
23. काव्य में आनन्द क्या है?

पाठान्त प्रश्न

1. वेद का लक्षण क्या है?
2. वेद के भेद और उपभेद कौन-से है?
3. ऋग्वेद का परिचय कराएँ?
4. वेदाङ्गों का परिचय कराएँ?
5. पुराण के पांच लक्षणों की व्याख्या कीजिए।
6. अट्ठारह पुराणों के नाम क्या हैं?
7. काव्यात्मक मन्त्र की अन्वय सहित व्याख्या कीजिए।
8. काव्य कान्तासम्मित को सोदाहरण निरूपित कीजिए।
9. काव्य वेद से और पुराण से कैसे अलग है?
10. काव्य प्रयोजन कितने है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. यजुर्वेद में
2. शिक्षा
3. वेद मन्त्रों के पदों का अर्थ निरूपण।

ध्यान दें:

4. सामवेद
5. ऋग्वेद
6. वेद
7. वेद किसी पुरुष के द्वारा रचित ग्रन्थ नहीं है, इसलिए वेद अपौरुषेय है।
8. छः अंगों सहित वेद

उत्तर-2

9. प्राचीन
10. वेदव्यास
11. पाँच
12. मित्र के जैसा
13. वराहपुराण, वामन पुराण, वायु पुराण और विष्णु पुराण।

उत्तर-3

14. वेदशास्त्रराशि और काव्य
15. वेद में
16. सारथी
17. रामायण
18. वाल्मीकि
19. महाभारत
20. काव्य
21. वेदार्थ के संवर्धन के लिए
22. रसास्वादन से
23. रस